श्रीशिवमहिम्नः स्तोत्रम्

भगवान शिव की स्तुति में लिखे गए काव्य में 'श्रीशिवमहिम्नः स्तोत्रम्,' सम्पूर्ण भारत में सर्वाधिक लोकप्रिय और प्रसिद्ध स्तोत्र है। इसे भगवान शिव के महान भक्त, गन्धर्वराज पुष्पदन्त ने संस्कृत में रचा था। एक दन्तकथा के अनुसार, एक बार अनजाने में पुष्पदन्त का पाँव बिल्व-पत्रों पर पड़ गया जिससे, भगवान शिव उनसे क्रुद्ध हो गए, क्योंकि बिल्व-पत्रों का उपयोग भगवान शिव की पूजा में किया जाता है। अपनी इस भूल का प्रायश्चित्त करने के लिए उन्होंने इस महान स्तोत्र की रचना की और इसे भगवान शिव को अर्पित किया। इससे भगवान शिव इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने पुष्पदन्त द्वारा अनजाने में जो भी अपराध हो गया था, उसे तुरन्त क्षमा कर दिया।

यह स्तोत्र एक गन्धर्व द्वारा रचित है, अतः इसके श्लोक संस्कृत के विशिष्ट छन्दों में रचित हैं जो कि विशिष्ट स्वरों और लय में गाए जाते हैं। इनमें से अनेक श्लोक उन प्रसिद्ध प्रसंगों का उल्लेख करते हुए भगवान शिव की स्तुति करते हैं जिनसे समस्त सृष्टि का संचालन करने वाली भगवान शिव की अद्वितीय शक्ति के दर्शन होते हैं, साथ ही कुछ श्लोक भगवान शिव की अपने भक्तों के प्रति असीम करुणा व दयालुता का वर्णन करते हैं। अन्य श्लोकों में दार्शनिकता का भाव है जिनमें उल्लासपूर्वक, भगवान शिव का वर्णन, ध्यान के लक्ष्य के रूप में, ब्रह्माण्ड के सर्वव्यापक स्रोत और पोषण करने वाले तत्त्व के रूप में किया गया है; उन्हें मन व इन्द्रियों के परे रहने वाले रूप में बताया गया है—संक्षेप में कहें तो भगवान शिव को साधना के लक्ष्य, अन्तर-आत्मा के रूप में दर्शाया गया है।

इसी प्रकार के एक श्लोक में कहा गया है :
"तीनों वेदों, सांख्य, योगशास्त्र, शैवमत, वैष्णवमत में साक्षात्कार के विभिन्न मार्ग बताए गए हैं। लोग ऐसे विभिन्न सीधे-टेढ़े मार्गों पर चलते हैं, यह सोचकर कि उनके स्वभाव के अनुरूप वही एक मार्ग सर्वश्रेष्ठ और सबसे उपयुक्त है; किन्तु, हे भगवन्, सभी मार्ग आप तक ही ले जाते हैं, उसी प्रकार जैसे भिन्न-भिन्न नदियाँ बहकर एक ही समुद्र में मिल जाती हैं।"[१]

सन् १९६७ में जब बाबा मुक्तानन्द ने श्रीगुरुदेव आश्रम का दैनिक कार्यक्रम सुनिश्चित किया, उस समय श्रीशिवमहिम्नः स्तोत्र का पाठ प्रति दिन होता था और आज भी सिद्धयोग पथ पर अकसर इस स्वाध्याय का पाठ होता है। पिछले कई वर्षों में गुरुमाई चिद्विलासानन्द ने सिद्धयोग के आश्रमों में व विश्वभर में अपनी टीचिंग्स् विज़िट्स् के दौरान श्रीशिवमहिम्नः स्तोत्र के पाठ का संचालन किया है।

[१] स्वाध्याय सुधा, [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स] पृ १४८।

©२०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।